Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

कोरोना महामारी और आर्थिक संकट

डॉ. कल्पना निरंजन
एसोसिएट प्रॉफेसर (अर्थशास्त्र विभाग)
आर्यकन्या पी.जी कॉलेज, झाँसी

वैश्विक महामारी कोरोना ने विश्व के विभिन्न देशो की अर्थव्यवस्थाओं पर बड़ा गहरा आघात किया है। जिसकी वजह से आज संपूर्ण विश्व की आर्थिक महाशक्तियां एक वैश्विक मंदी की आशंका से त्रस्त है। दुनिया भर के अर्थशास्त्री इस संभावित मंदी के पीछे कोरोना द्वारा दिए गए आघातों को ज़िम्मेदार मान रहे हैं। इस आघात का आकलन तीन प्रमुख आर्थिक मोर्चो पर किया जा सकता है–

- कोरोना में लागू हुए "सामजिक दूरी" एवं "पूर्ण बंदी" के नियमो के कारण व्यय के प्रतिमान में परिवर्तन।
- कोरोना के दौरान ध्वस्त हुए व्यवसायों और व्यावसायिक प्रतिकृतियो का पुनरउत्थान ना हो पाना।
- कोरोना की आगामी लहरों की वजह से व्याप्त भय और आशंका का वातावरण।

काफी विशेषज्ञ मानते हैं कि जिन देशो ने कोरोना की मार झेली वहां कुछ ऐसे सामजिक एवं आर्थिक परिवर्तन आये जिनकी वजह से बहुत सारे उत्पादों और सेवाओं की आवश्यकता, या तो खत्म हो गयी या फिर अपने निम्नतम स्तर पर आ गयी। इसकी वजह से कई उद्योगों की गाडी या तो पूरी तरह से रुक गयी या फिर मंदी की चपेट में आ गयी। यदि इसे एक उदाहरण की मदद से समझना हो तो हम फैशन उद्योग के बारे में छपी खबर के तथ्यों को टटोल सकते हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स में छपे इस विवरण के अनुसार भारत में करीब एक वर्ष तक दुनिया की सबसे कठोर पूर्णबंदी लगायी गयी। इस दौरान ज्यादातर बहुराष्ट्रीय समूहों ने "घर पर रह कर काम करने की संस्कृति" को अधिमान दिया। घर पर रह कर काम करने की इस संस्कृति का सबसे ज्यादा नुक्सान माडामे जैसे वस्त्र निर्माताओ को उठाना पड़ा। भारत में कार्यरत कामकाजी महिलाओ के लिए उच्च कोटि के "कार्यालय में पहनने वाले परिधान" तैयार करती थी।

ये मामला है खपत में कमी का। 2021 में जब स्थिति में सुधार आना शुरू हुआ तो नवम्बर के महीने तक आते आते इस समूह ने अपनी कुल बिक्री का 70 प्रतिशत भाग वापस पा लिया। मगर इसका बाज़ार पूरी तरह बदल गया। पहले ये समूह महानगरो में अच्छा व्यवसाय कर रहा था, मगर कोविड के पश्चात के परिदृश्य में इस समूह ने भारत के द्वितीय श्रेणी के शहर जैसे पुणे, मोहाली, जयपुर, भोपाल और चंडीगढ़ में ज़्यादा व्यवसाय किया। कोविड से पहले ऑनलाइन बिक्री कंपनी को 2 प्रतिशत की आय देती थी, मगर कोविड की पूर्णबंदी के बाद ये प्रतिशत बढ़ कर 10 हो गया।

2006 और 2007 में आई हुयी मंदी के मद्देनज़र वर्तमान स्थिति को देखा जाए तो हम पाते हैं की 2018–2019 में "वस्तु एवं सेवा कर" और "नोटबंदी" के कारण खुली अर्थव्यवस्था की अधिकतम राशि संगठित क्षेत्र में आ गयी। यहाँ पर ये जानना भी ज़रूरी है की संगठित क्षेत्र पहले से ही वैश्विक मंदी की आशंका से जूझ रहा था। असंगठित क्षेत्र के पैसे का संगठित क्षेत्र में आगमन कराप वंचन के लिए तो आदर्श है मगर

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

दूसरी ओर ये स्थिति पैसे और व्यापारिक गतिविधि के गुणात्मक प्रभाव पर बुरा असर डाल सकती है जिसकी वजह से एक पूरा तबका बेरोज़गारी के अँधेरे में डूब सकता है।

आर बी आई का बयान तस्वीर का एक पहलू दिखाता है। इस पहलू में निराशा भरी है, इसे देख कर लगता है कि एक बार फिर से भारत की अर्थव्यवस्था द्रुतगति मार्ग से उतर कर खेत की पगडंडियों पर चलने लगेगी। मगर इस तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है जो कहता है की कोविड के बाद की दुनिया में भारत दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनकर उभरेगा। ऐसा इसलिए होगा कोरोना के आघातों ने वे आर्थिक समीकरण पैदा कर दिए है जो भारत की अर्थव्यवस्था के अनुरूप हैं। सबसे बड़ी बात ये भी है कि भारत की अधिकांश आबादी अभी युवा है जिसकी वजह से यहाँ व्यय अधिक होगा और व्यापक पैमाने पर निर्माण के ज़रिये मुनाफे से भरे व्यावसायिक प्रतिमान आसानी से विकसित किये जा सकेंगे।

अर्थव्यवस्था के अभिवर्धिक और अन्य जांचे परखे उपाय :–

आम और पर मंदी से जूझती किसी भी अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए तरह तरह के संबल दिए जाते हैं। पिछले दो वर्षो में भारत सरकार की ओर से इस तरह की कई योजनाये सामने आई। निर्माण क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगो की सहायता के लिए ब्याज की दर कम करके लोन बांटे गए। इसी तरह लघु एवं मध्यम वर्ग के उद्योगों (SME’s) को भी प्रोत्साहन लोन दिए गए।

वित्त मंत्रालय और अन्य संस्थानों ने कई उद्योग समूहों की सहायता के लिए अनुदान देने का एलान किया। तरह तरह की सरकारी योजनाये भी सामने आई जिन्होंने व्यय करने की प्रवत्ति को बढ़ावा दिया।

मगर अर्थव्यवस्था पर वायरस और पूर्णबंदी की वजह से लगी चोट के लिए ये काफी नहीं है। पिछले दो वर्षो में भारत के बाजारों में व्यय करने का तरीका काफी बदला है। उदाहरण के तौर पर पर्यटन उद्योग और मनोरंजन जगत को लिया जा सकता है। भारतीय जनमानस ने मनोरंजन के नए साधन ढूंढ लिए हैं जिनकी प्रभावी लागत काफी कम है। सिनेमा की जगह अब लोग ओ टी टी के मंचो पर ज्यादा जा रहे हैं। ये मंच पुस्तकालय जैसी व्यवस्था के अंतर्गत कार्य करते है इसलिए मनोरंजन के साधनों की लागत घट जाती है। इसी तरह पर्यटन के लिए लोगो को तलाश है दूरदराज़ स्थानों की जहाँ पर भीड़ कम हो।

विलासिता नहीं आवश्यकता" का सिद्धांत अब भारतीय बाजारों के में ग्राहक को प्रोत्साहित करने के प्रमुख कारक की तरह कार्य कर रहा है। उदाहरण के तौर पर हम "अपेक्षाकृत उच्च बिक्री की मात्रा और कम कीमत वाले दैनिक उपयोग के उत्पादो के बाज़ार को देख सकते हैं। पूर्णबंदी से पहले इस मार्किट में कार्यरत ज्यादातर विपणन संस्थान "विलासितापूर्ण जीवन शैली" को मूल मंत्र मानते थे मगर पूर्णबंदी के बाद, "मूलभूत आवश्यकता," "व्यक्तिगत स्वास्थ्य रक्षा" और "स्वतः यथेष्ठ आवास" मूल मंत्र बन कर अब ग्राहको के सामान खरीदने की प्रेरणा दे रहे हैं। इसकी वजह से विज्ञापन समूहों को भी अपनी रणनीति बदलनी पड़ी है। सबसे बड़ी बात ये हुयी है की अब वस्तुओं के दाम एक बहुत बड़ा पैमाना बन गए हैं, जबकि पहले प्रसिद्धी की छाप और गुणवत्ता सबसे बड़ा पैमाना होते थे।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

कोरोना के बाद की दुनिया और नवसृजित साम्य से जुडी अनिश्चितताएं

कोरोना काल में भारत की अर्थव्यवस्था एक ऐसी स्थिति से गुज़र रही थी जिसे अर्थव्यस्था की शब्दावली में नोज डाइव (औंधे मूंह गिरना) कहते हैं। अर्थव्यवस्था की स्थिति डावांडोल थी, पहली लहर बीतने के बाद वर्ष 2021 की तीसरी तिमाही अर्थव्यवस्था की ओर से उबरने के कुछ संकेत आये जब ग्राहक मांग प्रतिमान में थोडा सा परिवर्तन हुआ। त्योहारों के दौरान बाज़ार ने थोडा सा उछाल देखा, शादियों में प्रतिबन्ध हटने के बाद स्थिति में सुधार होने के बाद आर्थिक गतिविधि थोड़ी सी तेज़ हुयी।

अर्थव्यवस्था के विशेषज्ञों को अंदाज़ा था कि हमेशा की तरह भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था देश को इस आर्थिक संकट से उबार लेगी। इसके लिए 2006 की आर्थिक मंदी का उदाहरण भी प्रस्तुत किया गया जब अंतर्राष्ट्रीय मंदी होने के बावजूद भारत के ग्रामीण हिस्सों में बहुराष्ट्रीय समूहों ने अपने उत्पाद ग्रामीण बाजारों में उतारे और मंदी के बावजूद मुनाफा कमाया। मगर 2021 की तीसरी तिमाही के दौरान ये उम्मीद भी धूमिल हो गई, इस समय विश्व स्वास्थ्य संगठन से जुडी संस्थाए लगातार दूसरी लहर के बारे में भविष्यवाणिया कर रही थी उनके अंदेशे सही साबित हुए। भारत में कोरोना की दूसरी लहर का गाँवों पर गहरा असर पड़ा। एक बार फिर से देश पूर्णबंदी की चपेट में आ गया। इस बार की पूर्णबंदी पहली पूर्णबंदी जितनी कडी नहीं थी, मगर इस पूर्णबंदी के कारण बाज़ार में एक किस्म के डर की भावना व्याप्त थी। तीसरी लहर के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जो अंदेशे जताए उन्हें बड़ी गंभीरता से लिया गया। सबसे बड़ी बात यह कि वृहत संस्थागत निवेश करने वाली संस्थाए भी सोच में पड़ गया।

आम तौर पर बड़े पैमाने पर निवेश करने वाली संस्थाए दूरगामी योजना के साथ बाज़ार में उतरती है, कोरोना के कारण पूर्णबंदी और मंदी जैसे विषय व्यापक योजना के अंतर्गत परखे जाते हैं और उनके लिए समाधान भी ढूंढें लाते हैं। मगर भारत में आई दूसरी लहर के चलते ऑटोमोबाइल, भवन निर्माण और सेवा प्रदाता खंड के कई बड़े निवेशकों ने अपने पाँव समेट लिए और कोरोना के बाद नवसृजित दुनिया के प्रादुर्भाव का इंतज़ार करने लगे।

कोरोना के बाद की दुनिया में भारत तेज़ी से आर्थिक शक्ति बन कर उभर रहा है इसका एक सबसे बड़ा कारण यह रहा कि भारत में आयोजित किया गया दुनिया का सबसे बड़ा कोरोना टीकाकरण कार्यक्रम। कोरोना की चौथी लहर में रूस और चीन जैसे शक्तिशाली और साधन संपन्न देशो के कुछ हिस्से काँप गए मगर भारत में इसका बड़े पैमाने पर कोई असर नहीं दिखाई दिया। ये तथ्य भारत के टीकाकरण की सफलता की ओर इशारा करता है।

कोरोना के बाद का नवसृचित साम्य

अप्रैल के महीने में भवन निर्माण के लिए ज़रूरी उत्पादों जैसे सरिया और सीमेंट के दामो में गिरावट देखी गयी। ये गिरावट इशारा करती है कि सरिया और सीमेंट के क्षेत्र में अब निवेशक खुल के पैसा लगा रहे हैं और बाज़ार में भवन निर्माण सामग्री की आवक भी तेज़ है। कमोवेश यही स्थिति बाकी खंडो में भी है। भारत के गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अप्रैल के महीने में बयान दिया की कोविड के बाद की परिस्थितयो में भारत की अर्थव्यवस्था की आरोग्यं प्राप्ति दर सबसे ज्यादा है। यदि पिछले कुछ महीनो के आंकड़ो पर नज़र डाले तो ये बात सही भी प्रतीत होती है। जिस तरह से इस गर्मी के मौसम में उत्तर भारत के पर्यटन स्थलों में पर्यटकों की भीड़ उमड़ी है वो साफ़ इशारा करती है कि नव सृजित साम्य में भारत की स्थिति पहले से मज़बूत हुयी है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X
सबसे बड़ा उदाहरण जम्मू और कश्मीर का है, आंकड़े कहते हैं कि अकेले कश्मीर में पर्यटकों की संख्या ने पिछले सात वर्षों का कीर्तिमान तोड़ दिया है।

नये व्यापारिक प्रतिमानों के साथ ग्राहकों की दोस्ताना मुलाक़ात

मुसीबत की घडी के कुछ सकारात्मक पहलु भी होते हैं, ऐसा ही एक सकारात्मक पहलु देखा गया स्टार्टअप की दुनिया में, 2021 में भारत के 12 स्टार्टअप बेहद प्रतिष्ठित यूनिकॉर्न क्लब का हिस्सा बन गए। माना जाता है कि ऐसा इसलिए भी हुआ क्यूंकि इन स्टार्टअप समूहों की प्राथमिक गणना भारत के बाज़ारों पर आधारित है। संगठित क्षेत्र की इस सफलता के पीछे एक और कारक को उत्तरदायी माना जा सकता है। यह "व्यापार करने में मिल रही सुलभता"। कोरोना टीकाकरण में भारत की सफलता, संकर व्यापारिक प्रतिमान का परिचालन करने में आसानी और सरकार की मिली जुली नीतियों की वजह से कई पश्चिमी देश अब भारत को अन्य देशो पर तरजीह देने लगे हैं।

इस कामयाबी का असर भारत के सेंसेक्स बाज़ार पर भी पड़ा है जहाँ सूचीबद्ध कम्पनियों का कैपिटलाइजेशन साठ प्रतिशत से ज्यादा बढ़ गया है और पिछले सात महीनो से एक खरब के स्तर पर है। आम तौर पर इस तरह की आर्थिक उछाल को देश में उत्पन्न रोजगारों से भी तौला जाता है उम्मीद की जाती है अगर इस तरह का उछाल आएगा तों रोज़गार के अवसर भी बढ़ेंगे।

यदि 2020 और 2021 से तुलना की जाए तो हम पाते हैं बेरोज़गारी की दर जो इन वर्षों में 24 प्रतिशत थी, अब लगातार घट रही है। यहाँ पर ये कहना भी ज़रूरी हो जाता है की बेरोज़गारी की इस घटती दर के पीछे एक कारण ये भी है कि ज़्यादातर निवेशकों ने मान लिया है कि कोरोना के बाद की दुनिया में व्यापारिक प्रतिमानों के स्वरुप ज़रूर बदल जायेंगे मगर उनमें मानव की भागीदारी कम नहीं होगी। यदि भविष्य की बात की जाए तो कह सकते हैं की कोविड की लहर का असर धीरे धीरे समाप्त हो रहा है। सन 2020 में अंदाज़ा लगाया गया था की भारत 2030 तक US-$ फाइव ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बन जायेगा।

References

How Working From Home Changed Wardrobes Around the World. (2021). The New York Times , https://www.nytimes.com/2021/04/15/style/working-from-home-wardrobes.html.

Chittalpillay, A. (2021). Here's what post-pandemic travel might look like. Busienss Today , https://www.businesstoday.in/opinion/columns/story/heres-what-post-pandemic-travel-might-look-like-314975-2021-12-09.

Lele, A. (2021). Collection efficiency for retail, SME loans improves to pre-Covid levels. Business Standard https://www.business-standard.com/article/finance/collection-efficiency-for-retail-sme-loans-improves-to-pre-covid-levels-121111000919_1.html.

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X
Mishra, S. (2021). #BackToBusiness: Madame's Akhil Jain on the strategy that needs to be followed to bounce back. The Financial Express, https://www.financialexpress.com/brandwagon/backtobusiness-madames-akhil-jain-on-the-strategy-that-needs-to-be-followed-to-bounce-back/2222777/.

https://www.aajtak.in/business/news/story/rbi-says-indian-economy-likely-to-take-15-years-to-recover-focus-on-7-wheels-tutk-1455587-2021-04-30.